Great Jain Poet Pandit Daulatramji's

Chha Dhaalaa

Old hand-written manuscript

Available in :

Bhagwan Parsvanath Digamber Jain
Panchayati Temple, Aligarh

Lipikar :

Deepchand Brahaman, Firozabad

Time :

Vikram Samvat 1944, Aasada shudi Cautha, Friday

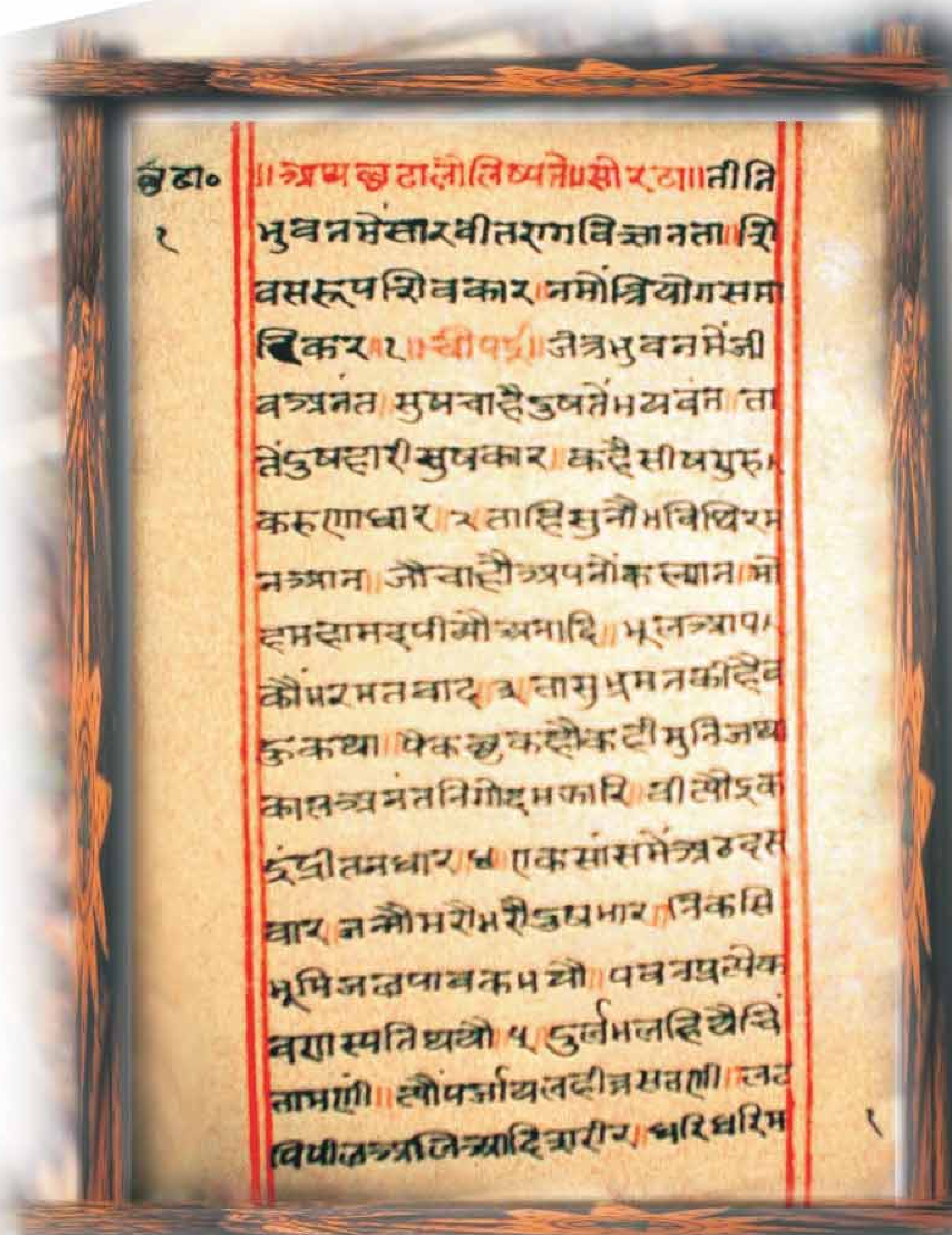
छं॰ढा॰ ॥अथ छह ढालो लिष्यते॥ सोरठा॥ तीनि
१ भुवनमेंसारवीतरागविज्ञानता॥ शि
वसरूपशिवकार॥ नमोंत्रियोगसम्हा
रिकर॥१॥ चौपई॥ जीवत्रभुवनमेंजी
वअनंत॥ सुषचाहेंदुषतेंभयवंत॥ ता
तेंदुषहारीसुषकार॥ कहेंसीषगुरु
करुणाधार॥२॥ ताहिसुनौभविथिरम
नआन॥ जौचाहौअपनौंकल्यान॥ मो
हमहामदपीयौअनादि॥ भूलआपकौं
भरमतवादि॥३॥ तासुभ्रमनकीहै
बहुकथा॥ पेकछुकहोंकहीमुनिजथा॥
कालअनंतनिगोदमझारि॥ बीत्यौएके
न्द्रीतनधारि॥४॥ एकसांसमेंअठदस
बार॥ जन्मौमर्‍यौभर्‍यौदुषभार॥ निकसि
भूमिजलपावकभयौ॥ पवनप्रत्येक
वनस्पतिथयौ॥५॥ दुर्लभलहिज्योंचिं
तामणी॥ त्यौंपर्जायलहीत्रसतणी॥ लट
पिपीलअलिआदिशरीर॥ धरिधरिम १

यौंसहीवक्रमीर॥८॥कबहूंपंचेंद्रीप
शुभयौ॥मननिनपिषटअज्ञानीथयौ
सिंहादिकसैनीह्वैक्रूरनिबलपसुहत
खायेभूरि॥९॥कबहूआपभयौबल
हीन॥सबलनिकरिषायौअतिदीन॥
छेदनभेदनभूखपयास॥भारवहनहि
मआतपत्रास॥वधबंधनआदिकदु
षघनें॥कोटिजीभतेंजातनभनें॥अति
संक्लेशभावतेंमरौ॥घोरसुभ्रसागरमें
परौ॥१॥तहांभूमिपरसतदुषइसौ॥
वीछूसहसडसेंतनतिसौ॥तहांराधि
श्रोणितवाहिनी॥कृमकुलकलितदेह
दाहिनी॥१०॥सेमलतरुजुतदलअसि॥ पत्र
असिजोदेहविदारेंतत्र॥मेरुप्रमान
लोहगलिजाय॥ऐसीसीतउष्णताथा
य॥तिलतिलकरेंदेहकेषंड॥असुर
भिरावेंदुःषप्रचंड॥सिंधुनीरतेंप्यास
नजाय॥तौपनएकनबूंदनलहाय॥ती

छ॰ढा॰ तिलोक कौ अन्न जु खाय। मिटै न भूख क-
२ णा न लहाय॥ ए दुख बहु सागर लौं सहै॥
कर्म जोग तैं नर भव लहै॥३॥ जननी उद-
र वसौ नव मास॥ अंग सकुचतैं पाई त्रा-
स॥ निकसत जे दुख पाये घोर॥ तिनको क-
हत न आवै ओर॥४॥ बालपनें में ज्ञान न
लह्यौ॥ तरुण समें तरुणी रत रह्यौ॥ अ-
र्द्ध मृतक सम बूढापनौ॥ कैसें रूप लखै आ-
पनौं॥५॥ कभी अकाम निर्जरा करै॥ भवन-
त्रिक में सुरतनु धरै॥ विषय चाह दावा-
नल दह्यौ॥ मरत विलाप करत दुख स-
ह्यौ॥६॥ जो विमानवासी हू थाय॥ सम्य-
क दर्शन विन दुख पाय॥ तहांतैं चय था-
वर तनु धरै॥ यौं परवर्तन पूरे करै॥७॥
इति प्रथम ढाल॥ ॥अथ द्वितीय ढा-
ल॥ पद्धरी छंद॥ ऐसें मिथ्या दृग ज्ञा-
न चर्ण॥ वशि भ्रमत भरत दुख जन्म मर-
ण॥ तातें इनकूं तजिये सुजान॥ सुन तिन २

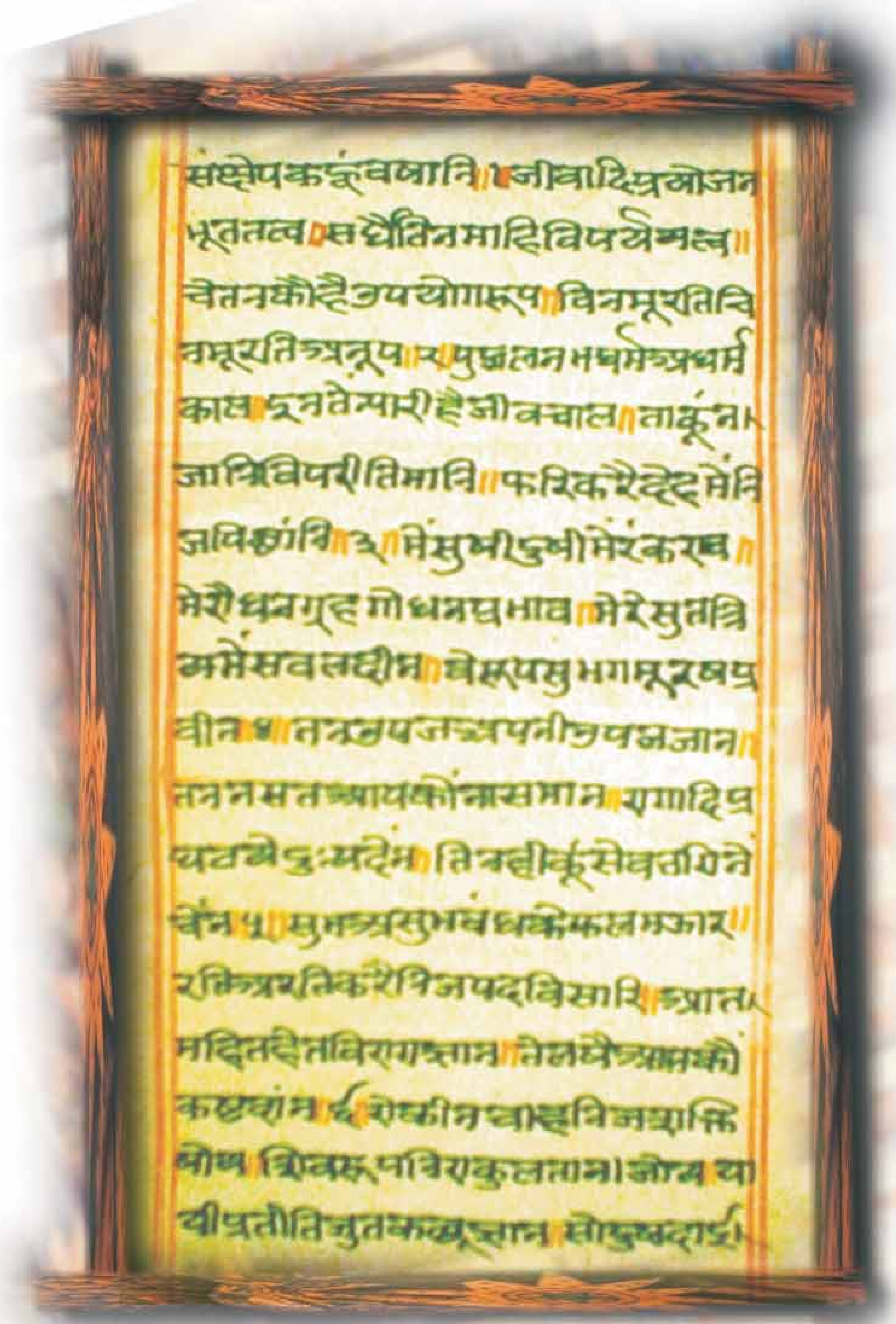

संक्षेप कहूं बखानि ॥१॥ जीवादि प्रयोजन
भूततत्त्व । सरधैं तिन माहि विपर्ययत्व ॥
चेतन कौ है उपयोग रूप ॥ विनमूरति चि
नमूरति अनूप ॥२॥ पुद्गल नभ धर्म अधर्म
काल ॥ इन तें न्यारी है जीव चाल ॥ ताकूं न
जानि विपरीति मानि ॥ करि करै देह में नि
ज पिछांनि ॥३॥ मैं सुखी दुखी मैं रंक राव ॥
मेरी धन गृह गोधन प्रभाव ॥ मेरे सुत ति
य मैं सबल दीन ॥ बेरूप सुभग मूरख प्र
वीन ॥४॥ तन उपजत अपनी उपज जान ॥
तन नसत आपकौ नास मान ॥ रागादि प्र
गट ये दुःख दैन ॥ तिनही कूं सेवत गिनै
चैन ॥५॥ सुभ असुभ बंध के फल मझार ॥
रति अरति करै निजपद विसारि ॥ आत
म हित हेत विराग ज्ञान ॥ ते लखै आपकौ
कष्टदान ॥६॥ रोकै न चाह निज शक्ति
खोय ॥ शिवरूप निराकुलता न जोय ॥ या
ही प्रतीति जुत कछुक ज्ञान ॥ सो दुखदाई

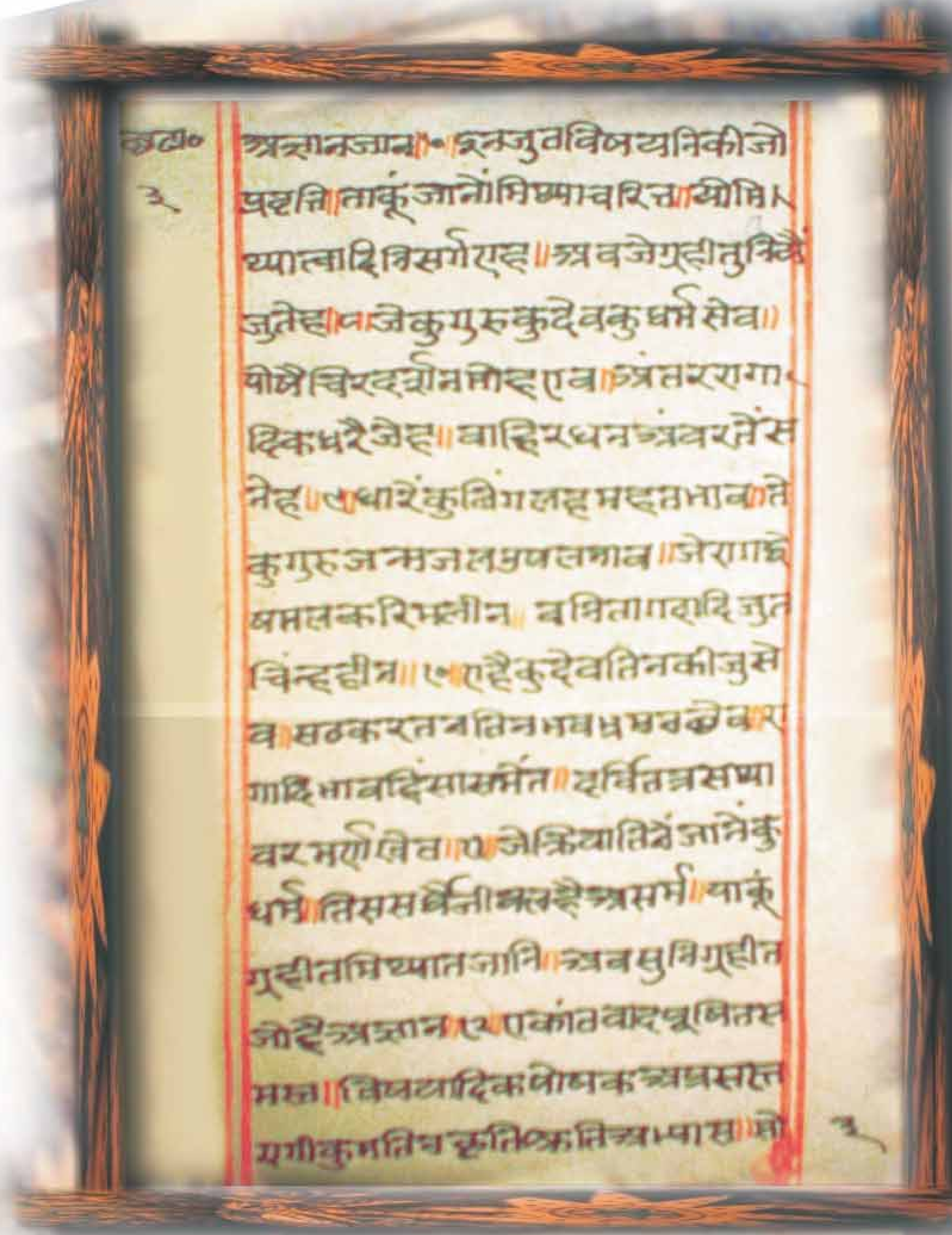

छढा० अज्ञानजान॥५॥इन जुत विषयनि की जो
३ प्रवृत्ति ताकूं जानों मिथ्याचरित्त॥यों मि-
थ्यात्वादि निसर्ग एह॥अब जे गृहीत सुनि-
जु तेह॥जे कुगुरु कुदेव कुधर्म सेव॥
पोषै चिर दर्शनमोह एव॥अंतर रागा-
दिक धरै जेह॥बाहिर धन अंबर तैं स-
नेह॥९॥धारै कुलिंग लहि महतभाव॥ते
कुगुरु जन्मजल उपल नाव॥जे रागद्वे-
ष मल करि मलीन॥ वनिता गदादि जुत
चिन्ह दीन॥१०॥ए हैं कुदेव तिनकी जु से-
व॥ सठ करत न तिन भव भ्रमण छेव॥रा-
गादि भाव हिंसा समेत॥ दर्वित त्रस था-
वर मरण खेत॥११॥जे क्रिया तिन्हें जानें कु-
धर्म॥ तिस सरधैं जीव लहै असर्म॥याकूं
गृहीत मिथ्यात जानि॥अब सुनि गृहीत
जो है अज्ञान॥१२॥एकांतवाद दूषित सम-
स्त॥ विषयादिक पोषक अप्रशस्त॥
रागी कुमतिन कृत श्रुत अभ्यास॥ सो ३

ईकुबोधवकुदेनत्रास॥ ३॥ जेख्यातिलाभ
पूजादिचाह॥ धरिकरनविविधविधिदे
हदाह॥ आतमअनातमकेज्ञानहीन॥ जे
जेकरनीतनकरनछीन॥ ४॥ तेसबमि
थ्याचारित्रत्यागि॥ अबआतमकेहित
पंथलागि॥ जगजालभ्रमनकोदेहत्यागि
अबदौलतनिजआतमसुपागि॥ ५॥ इ
तिद्वितीयढाल॥ २॥ अथत्रतीयढालप्र
जोगीरासा॥ आतमकोहितहैसुखसोसु
खआकुलताबिनकहिये॥ आकुलता
शिवमाहिनतातेंशिवमगलाग्योचहिये
सम्यकदर्शनज्ञानचरणशिवमगसोदु
विधविचारो॥ जोसत्यारथरूपसुनिश्चे
कारनसोव्यवहारो॥ परद्रव्यनतेंभिन्न
आपमेंरुचिसम्यक्तभलाहै॥ आपरूपको
जानपणोसोसम्यकज्ञानकलाहै॥ आ
परूपमेंलीनरहेथिरसम्यकचारितसो
ई॥ अबव्यवहारमोखमगसुनिएहेतनि

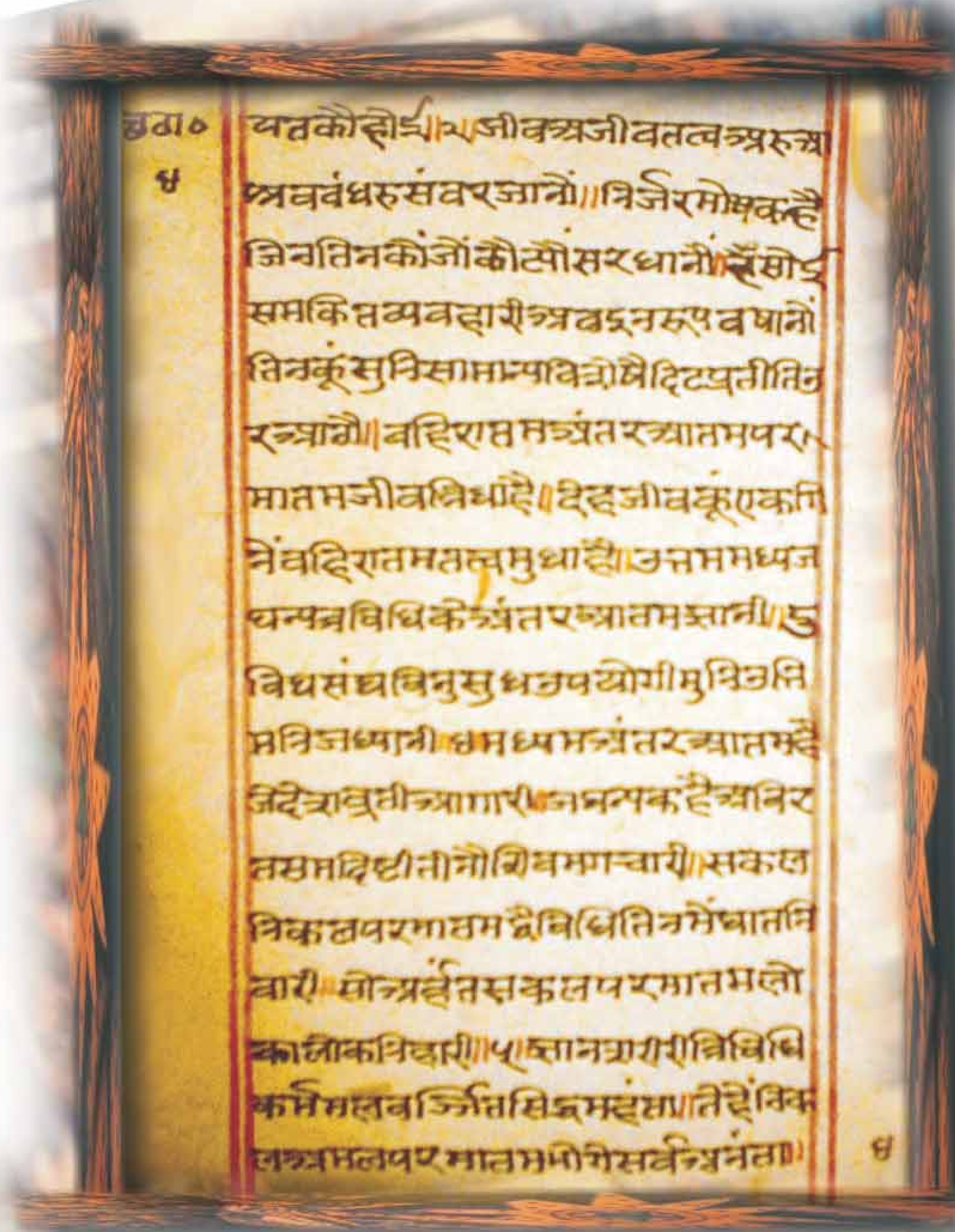

छढा०
४

यतकोहोई॥२॥जीवअजीवतत्वअरुआ
स्रवबंधरुसंवरजानों॥निर्जरमोक्षकहे
जिनतिनकोंजोंकोंत्योंसरधानों॥हेसोई
समकितव्यवहारीअबइनरूपबषानों
तिनकूंसुनिसामान्यविशेषेंदृढप्रतीतिउ
रआनों॥बहिरातमअंतरआतमपर
मातमजीवत्रिधाहै॥देहजीवकूंएकगि
नेंबहिरातमतत्वमुधाहै॥उत्तममध्यज
घन्यत्रिविधिकेअंतरआतमज्ञानी॥दु
विधसंगबिनुसुधउपयोगीमुनिउत्त
मनिजध्यानी॥मध्यमअंतरआतमहें
जेदेशव्रतीअनगारी॥जघन्यकहेअविर
तसमदृष्टीतीनोंशिवमगचारी॥सकल
निकलपरमातमद्वैविधितिनमेंघातनि
वारी॥सोअरहंतसकलपरमातमलो
कालोकनिहारी॥५॥ज्ञानशरीरीत्रिविधि
कर्ममलवर्जितसिद्धमहंता॥तेहैंनिक
लअमलपरमातमभोगेंसर्वअनंता॥ ४

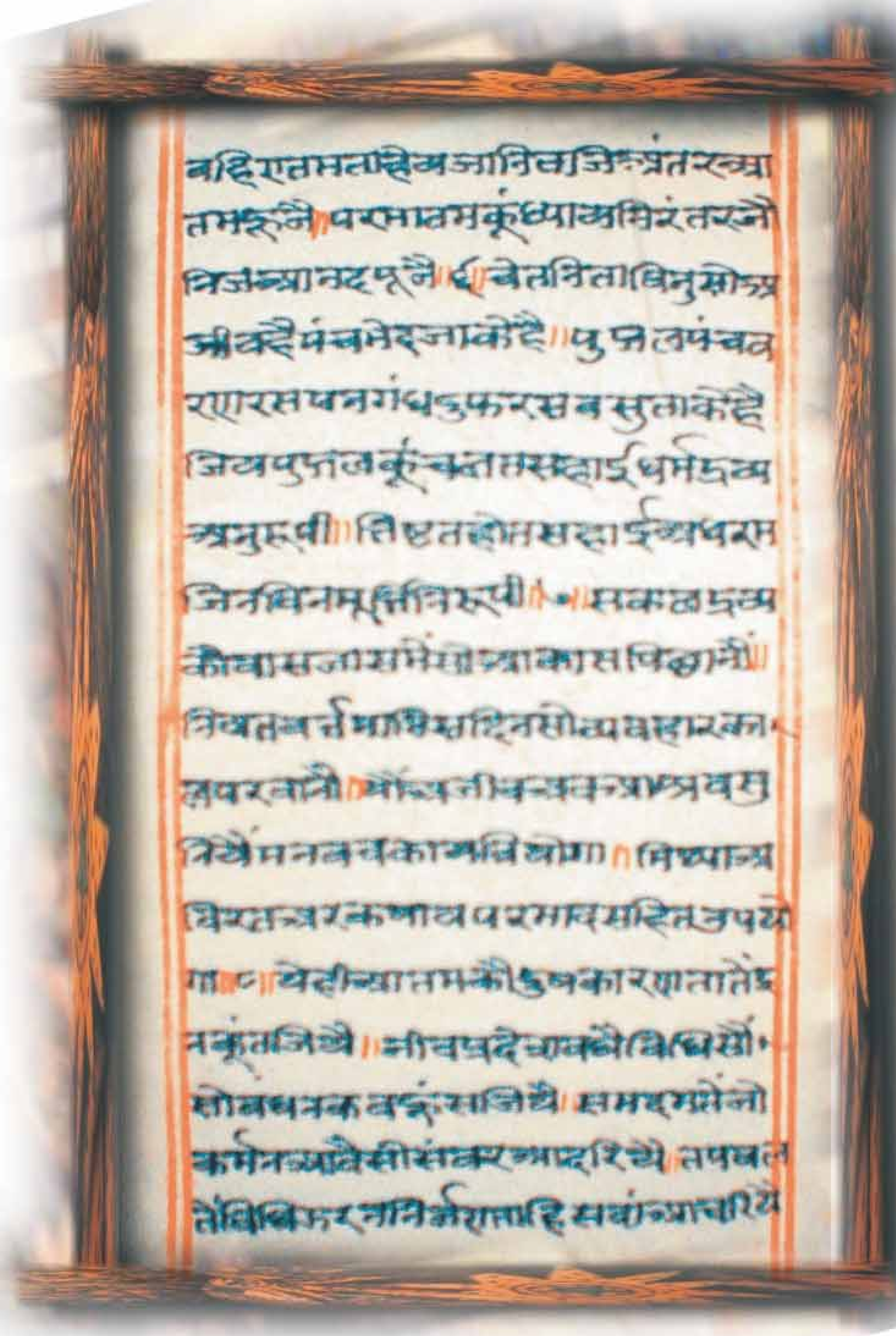
बहिरातमताहेय जानितजिअंतरआ
तमहूजै॥ परमातमकूंध्यायनिरंतरजो
निजआनंदपूजै॥ ४॥ चेतनताबिनुसोअ
जीवहै पंचभेदताकेहै॥ पुद्गलपंचव
रणरसपनगंधदुफरसबसुताकेहै
जियपुद्गलकूंचलनसहाई धर्मद्रव्य
अनुरूपी॥ तिष्टतहोयसहाईअधरम
जिनबिनमूर्तिनिरूपी॥ ५॥ सकलद्रव्य
कौवासजासमेंसोआकासपिछानौ॥
नियतवर्तनानिशिदिनसोव्यवहारका
लपरवानौ॥ यौंअजीवअवआश्रवसु
नियेमनवचकायत्रियोगा॥ मिथ्याअ
विरतअरुकषायपरमादसहितउपयो
गा॥ ६॥ येहीआतमकौदुखकारणतातें इ
नकूंतजियै॥ जीवप्रदेशबंधेविधिसौं
सोबंधनकबहुंनसजियै॥ समदमतेंजो
कर्मनआवैसोसंवरआदरियै॥ तपबल
तैंविधिझरननिर्जराताहिसदाआचरियै

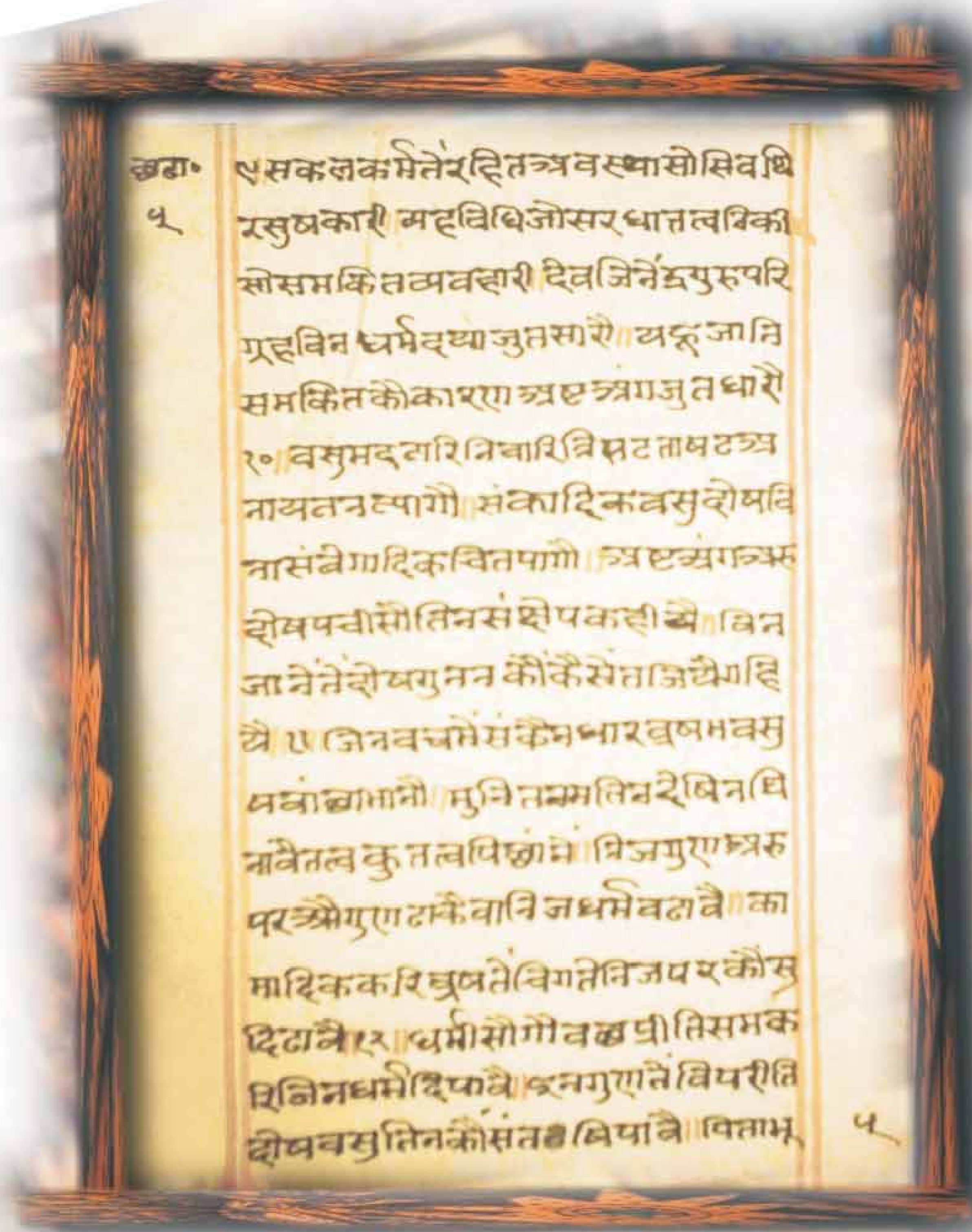
छहा० ए सकल कर्म तें रहित अवस्था सो सिव थि
५ र सुखकारी॥ यह विधि जो सरधा तत्वनिकी
सो समकित व्यवहारी॥ देव जिनेंद्र गुरु परि
ग्रह बिन धर्म दयाजुत सारो॥ यहु जानि
समकित को कारण अष्ट अंग जुत धारो
१०॥ वसु मद टारि निवारि त्रिसठता षट अ
नायतन त्यागो॥ संकादिक वसु दोष वि
ना संवेगादिक चित पागो॥ अष्ट अंग अरु
दोष पचीसों तिन संक्षेप कही ये॥ बिन
जाने तें दोष गुनन कौं कैसें तजिये गहि
ये॥ ॥ जिन वच में संका न धार वृष भव सु
ख वांछा भानै॥ मुनि तन मलिन न देखि घि
नावै तत्व कुतत्व पिछानै॥ निज गुण अरु
पर औगुण ढांके वा निज धर्म बढावै॥ का
मादिक करि वृषतें चिगते निज पर कौं सु
दिढावै॥ १२॥ धर्मी सों गौ वछ प्रीति सम क
रि जिन धर्म दिपावै॥ इन गुण तें विपरीति
दोष वसु तिन कौं संतत खिपावै॥ पिता भू ५

मवामातुलनृपजोहोइनतौमदठानै॥म
दनरूपकौमदनज्ञानकौधनवलकौम
दभानै॥१४॥तपकौमदनमदनप्रभुताकौ
करैनसोनिजजानै॥मदधारैतौयहीदो
षवसुसम्यककूंमलठानै॥कुगुरुकु
देवकुवृषसेवककीनहीप्रसंसउचरै
है॥जिनमुनिजिनश्रुतविनुकुगुरादिक
तिनहिनमननकरैहै॥१५॥दोषरहितगुणस
हितसुधीजेसम्यकदर्शसजैहै॥चारि
तमोहवसलेशनसंजमपैसुरनाथज
जैहै॥गेहीपैगृहमेंनरचैज्यौंजलतैंभि
न्नकमलहै॥नगरनारिकौप्यारजथा
कादेमेंहेममलहै॥१६॥प्रथमनर्क
विनषटभूज्योतिषवाणभवनसंढनारी
थावरविकलत्रयपशुमेंनहीउपज
तसम्यकधारी॥तीनिलोकतिहुकाल
मांहिनहीदर्शनसोसुखकारी॥सकलध
र्मकौमूलयहीइसविनकरनीदुखका

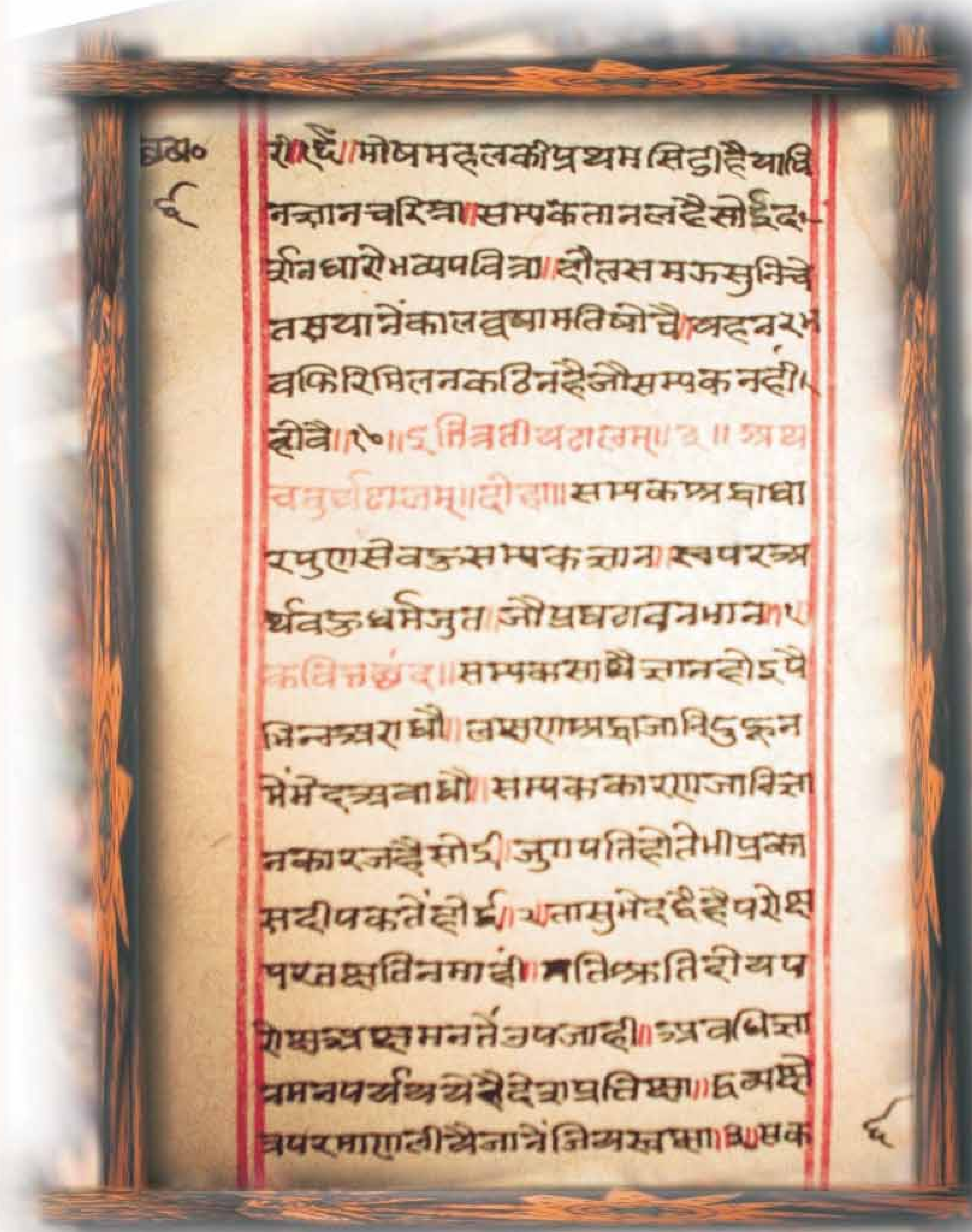
छ०ढा०
९
री॥ ५॥ मोषमहलकीप्रथमसिढीहै याबि
नज्ञानचरित्रा॥ सम्यकतानलहै सोई दर्श-
नधारो भव्यपवित्रा॥ दौलसमझसुनिचे
तसयानेकालवृथामतिखोवै॥ यहनरभ
वफिरिमिलनकठिनहैजोसम्यकनहीं
होवै॥ १७॥ इतितीसरीढालसम्॥ ३॥ अथ
चतुर्थढालम्॥ दोहा॥ सम्यकश्रद्धाधा
रपुनिसेवहुसम्यकज्ञान॥ स्वपरअ
र्थबहुधर्मजुत॥ जोप्रगटावनभान॥ १॥ प
द्धरिछंद॥ सम्यकसाथैज्ञानहोइपै
भिन्नअराधौ॥ लक्षणश्रद्धाजानिदुहून
मेंभेदअबाधौ॥ सम्यककारणजानिज्ञा
नकारजहैसोई॥ जुगपतिहोतेभीप्रका
सदीपकतेंहोई॥ २॥ तासुभेददोहैपरोक्ष
परतक्षतिनमाहीं॥ मतिश्रुतिदोयप
रोक्षअक्षमनतेंउपजाहीं॥ अवधिज्ञा
नमनपर्जयदोहैदेशप्रतिक्षा॥ द्रव्य
क्षेत्रपरमाणलीयेजानेजियस्वछा॥ ३॥ सक
९

लद्रव्यकेगुणअनंतपर्यायअनंता॥
जानैंयेकैकालप्रघटकेवलभगवंता॥
ग्यानसमाननआनजगतमेंसुषकोका
रण॥यहपरमामृतजन्मजरामृतरोग
निवारण॥४॥कोटिजन्मतपतपैग्यान
विनकर्मझरैंजे॥ग्यानीकेंछिनमेंत्रगु
प्तितैंसहजटरैंते॥मुनिव्रतधारिअनं
तबारग्रैवकउपजायौ॥पैनिजआत
मग्यानविनासुषलेशनपायौ॥५॥तातैं
जिनवरकथिततत्त्वअभ्यासकरीजे
संसयविभ्रममोहत्यागिआपोलषिली
जे॥यहमानुषपर्यायसुकलसुनिवौ
जिनवांनी॥यहविधिगयेंनमिलैंसुमनि
ज्यौंउदधिसमानी॥६॥धनसमाजगजराज
बाजतौकाजनआवै॥ग्यानआपको
रूपभयोथिरअचलरहावै॥तासुग्या
नकौकारणस्वपरविवेकवषानौं॥
कोटिउपायबनायभव्यताकौंउरआ

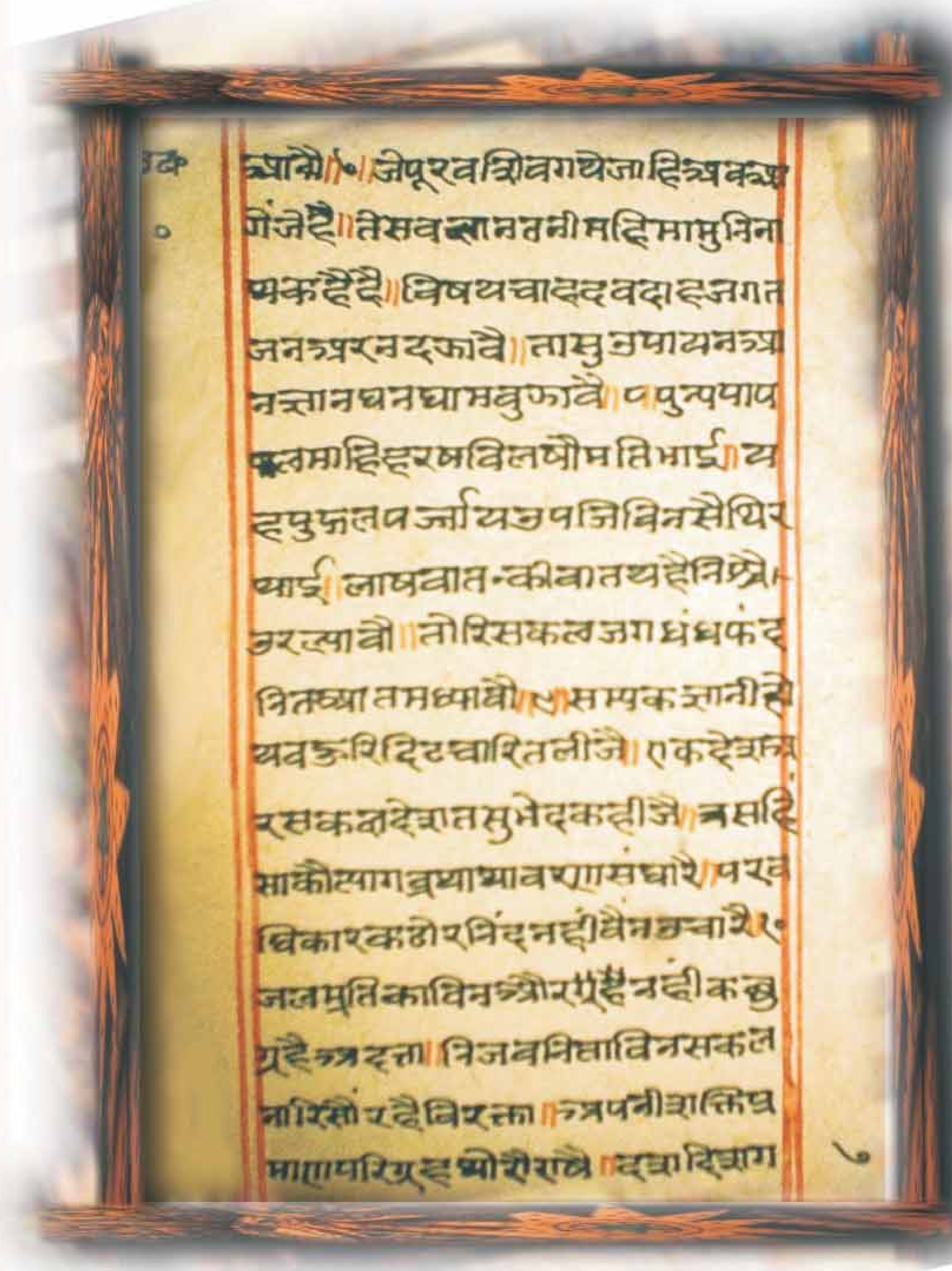
आगे॥५॥ जे पूरव शिव गये जाहि अब आ
गे जेहैं॥ ते सब ज्ञान तनी महिमा मुनिना
थ कहे हैं॥ विषय चाह दव दाह जगत
जन अरन दझावै॥ तासु उपाय न आ
न ज्ञान घन घान बुझावै॥६॥ पुन्य पाप
फल माहि हरख बिलखौ मति भाई॥ य
ह पुद्गल परजाय उपजि बिनसै थिर
थाई॥ लाख बात की बात यहै निश्चै
उर ल्यावौ॥ तोरि सकल जग धंध फंद
नित आतम ध्यावौ॥७॥ सम्यक ज्ञानी हो
य बहुरि दिढ चारित लीजे॥ एक देश अ
रु सकल देश तसु भेद कहीजे॥ त्रस हिं
सा को त्याग वृथा थावर न संघारै॥ पर व
धकार कठोर निंद नहीं वैन उचारै॥८॥
जल मृतिका बिन और नहीं कछु
गहै अदत्ता॥ निज वनिता बिन सकल
नारि सौं रहै बिरत्ता॥ अपनी शक्ति वि
चार परिग्रह थोरौ राखै॥ दश दिश गम

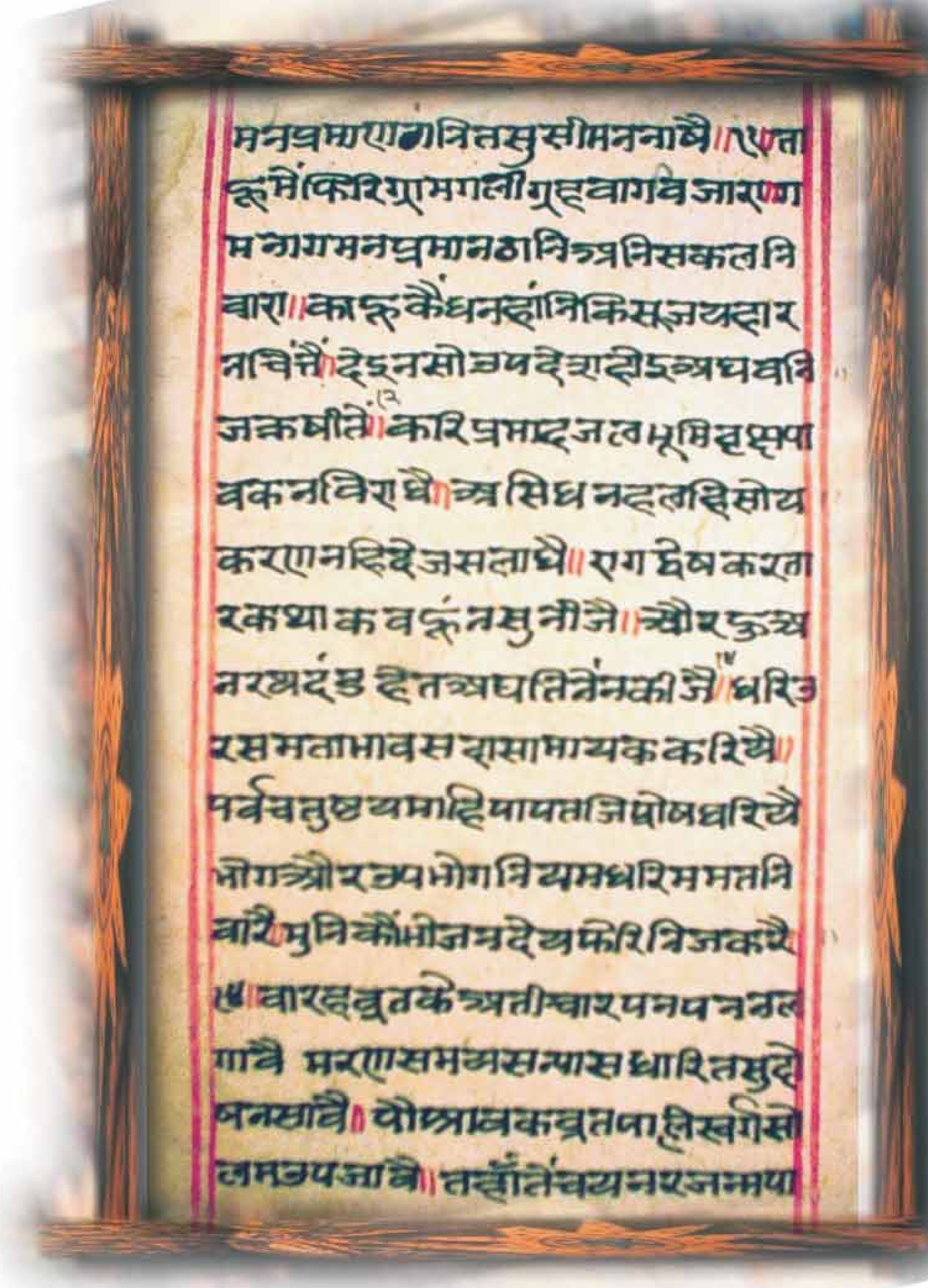
मनप्रमाणतातिससुसीमननाषै॥१०॥ता
हूमेंफिरिग्रामगलीगृहबागबजारण
गमनागमनप्रमानठानिअनसकलनि
वारा॥काहूकैधनहानिकिसीजयहार
नचिंतै॥देइनसोउपदेशहोइअघवनि
जकृषीतैं॥करिप्रमादजलभूमिवृक्षपा
वकनविराधै॥असिधनुहलहिंसोप
करणनहिदेजसलाधै॥रागद्वेषकरता
रकथाकबहूंनसुनीजै॥औरहुअन
रथदंडहेतुअघतिनेंनकीजै॥१२॥धरिउ
रसमताभावसदासामायककरियै॥
परवचतुष्टयमाहिपापतजिप्रोषधधरियै
भोगऔरउपभोगनियमधरिममतनि
वारै॥मुनिकौंभोजनदेयफेरिनिजकरै
॥१३॥बारहव्रतकेअतीचारपनपननल
गावैमरणसमयसंन्यासधारितसुदो
षनसावै॥यौंश्रावकव्रतपालिस्वर्गसो
लमउपजावै॥तहंतेंचयनरजन्मपा

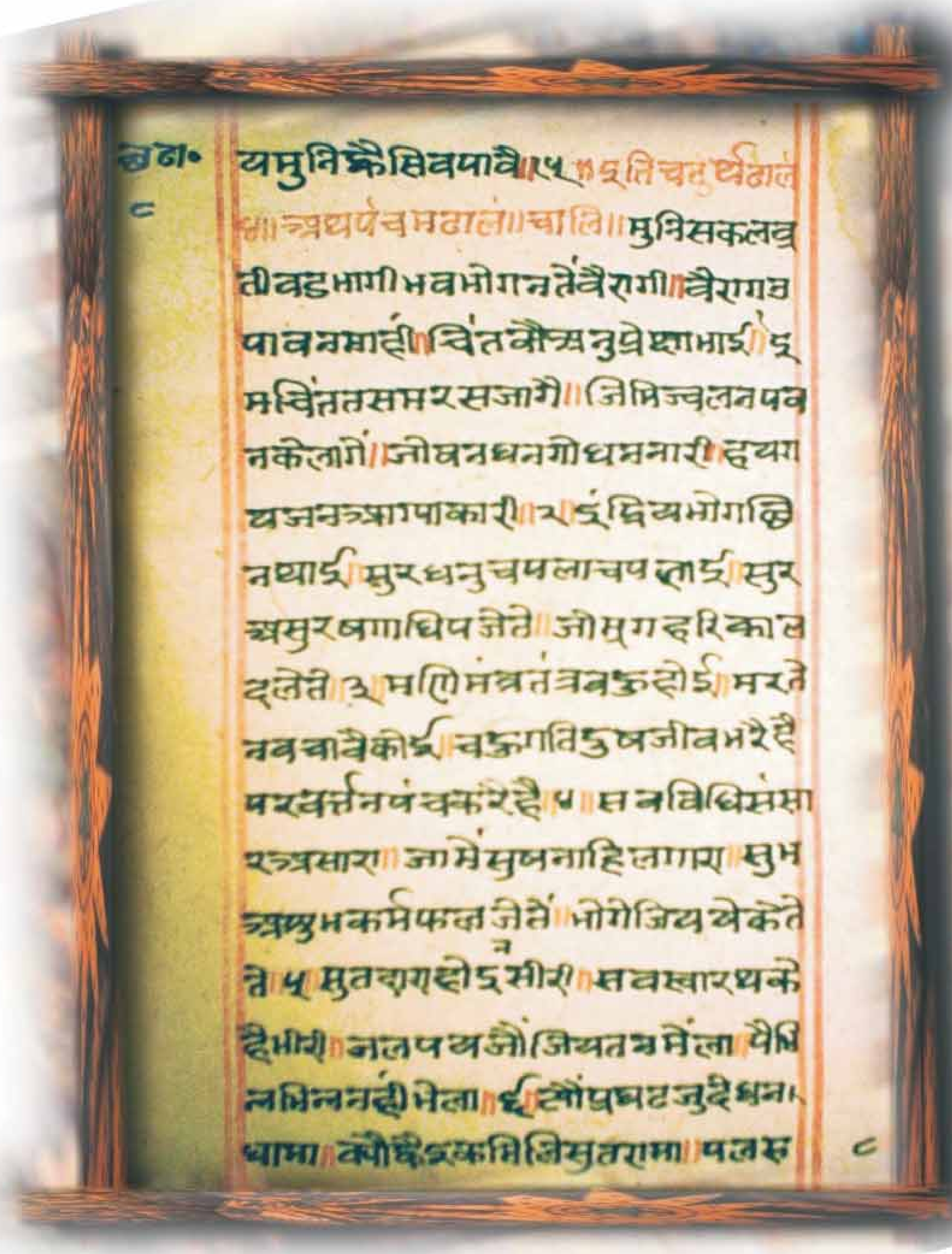
छ॰ढा॰ यमुनिह्वैशिवपावै॥१५॥इतिचतुर्थढाल
८ ॥अथपंचमढाल॥चालि॥मुनिसकलव्र
तीबडभागी भवभोगनतेंवैरागी॥वैराग्यउ
पावनमाई॥चिंतैअनुप्रेक्षाभाई॥१॥इ
नचिंततसमसुखजागै॥जिमिज्वलनपव
नकेलागै॥जोवनगृहगोधननारी॥हयग
यजनआज्ञाकारी॥२॥इंद्रियभोगछि
नथाई॥सुरधनुचपलाचपलाई॥सुर
असुरखगाधिपजेते॥मृगज्यौंहरिकाल
दलेते॥३॥मणिमंत्रतंत्रबहुहोई॥मरते
नबचावैकोई॥चहुंगतिदुखजीवभरैहै
परवर्त्तनपंचकरैहै॥४॥सबविधिसंसा
रअसारा॥जामेंसुखनाहिलगारा॥सुभ
असुभकर्मफलजेते॥भोगैजियएकेते
ते॥५॥सुतदाराहोइनसीरी॥सबस्वारथके
हैभीरी॥जलपयज्यौंजियतनमेला॥पैभि
न्नभिन्ननहीभेला॥६॥तौंप्रगटजुदेधन
धामा॥क्यौंह्वैइकमिलिसुतरामा॥पलस ८

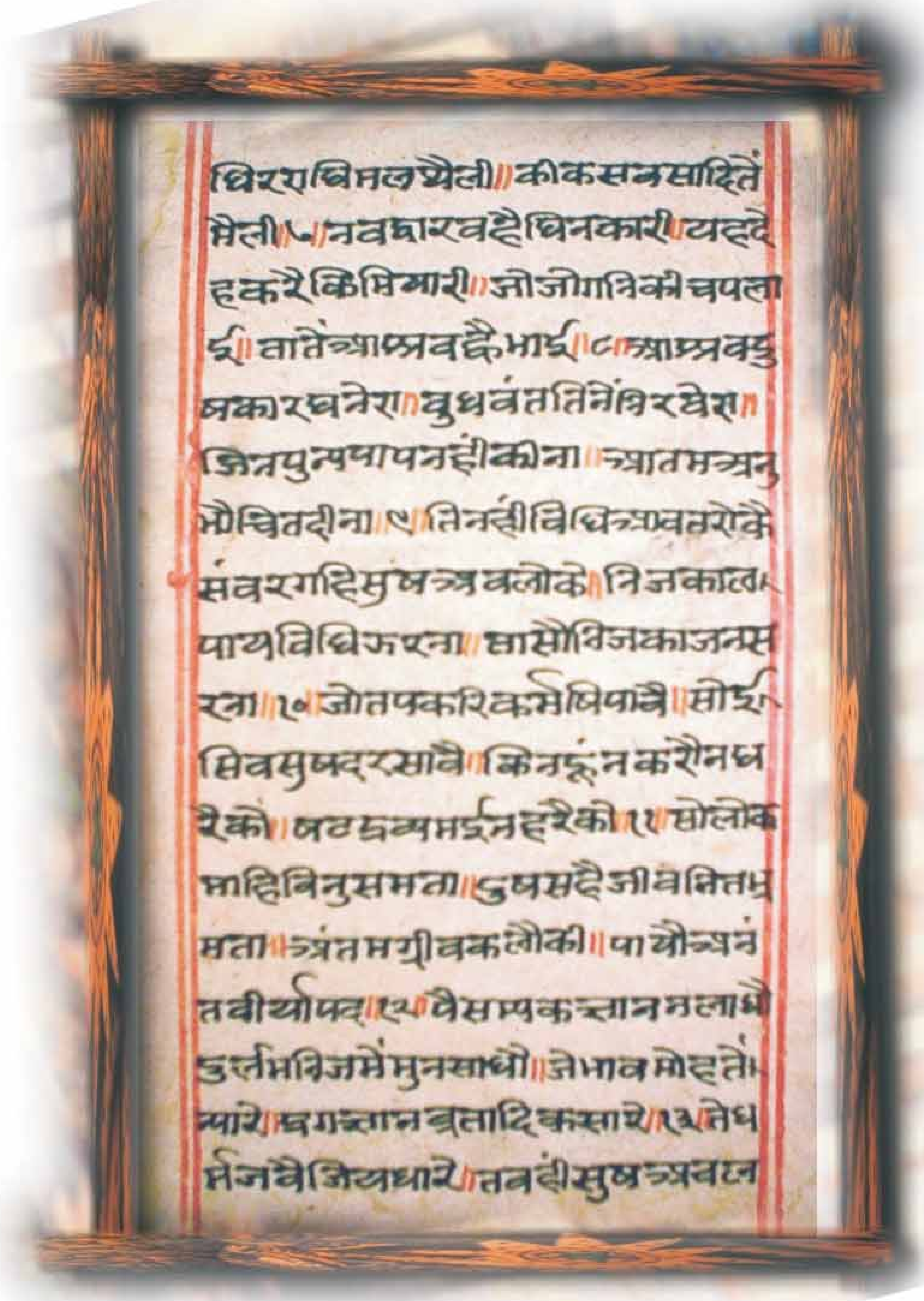
धिरराधिमलथैली॥ कीकसवसादितैं
मैली॥ ६॥ नवद्वारवहै घिनकारी॥ यह दे
हकरै किमियारी॥ जोजोगनिकी चपला
ई॥ तातैं आस्रव है भाई॥ ७॥ आस्रवदु
खकार घनेरा॥ बुधवंत तिनैं निरवेरा॥
जिनपुन्यपापनहीं कीना॥ आतमअनु
भौचितदीना॥ ८॥ तिनहीविधिआवतरोके
संवरगहिसुखअवलोके॥ निजकाल
पायविधिझरना॥ तासौं निजकाजनस
रना॥ ९॥ जोतपकरिकर्मखिपावै॥ सोई
सिवसुखदरसावै॥ किनहूं न करौ न ध
रैको॥ षटद्रव्यमई न हरैको॥ १०॥ सोलोक
मांहिबिनुसमता॥ दुखसहै जीवनितभ्र
मता॥ अंतमग्रीवकलौंकी॥ पायौ अनं
तबीर्यापद॥ ११॥ पैसम्यकज्ञान न लाधौ
दुर्लभनिजमेंमुनसाधौ॥ जेभावमोहतैं
न्यारे॥ दृगज्ञानव्रतादिकसारे॥ १२॥ तेध
र्मजबैजियधारै॥ तबहीसुखअचलनिहारै

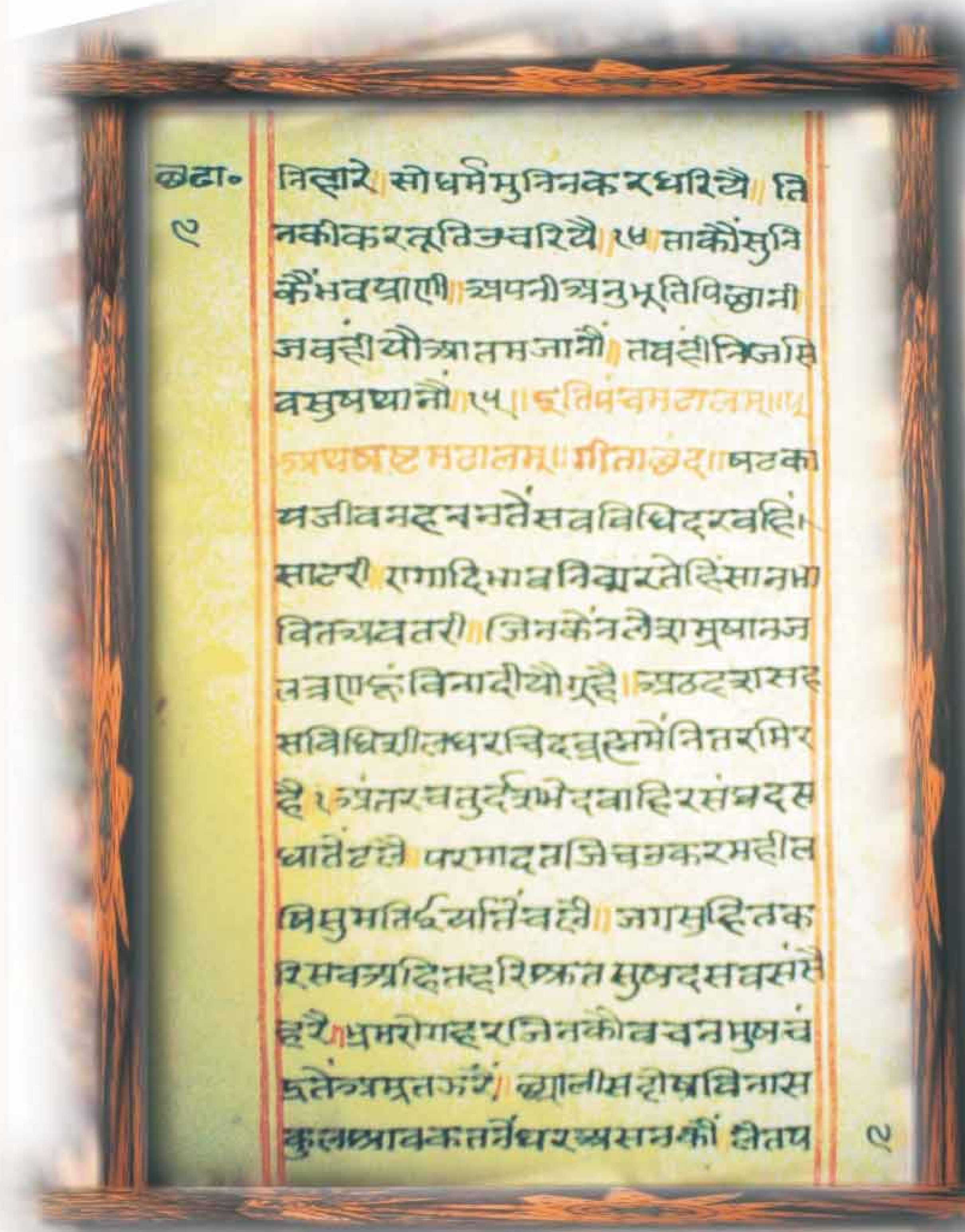

छढा॰ निसारे॥ सोधर्ममुनिनकरधरियै॥ ति
९ नकीकरतूतिउचरियै॥१४॥ ताकौंसुनि
कैंभवप्राणी॥ अपनीअनुभूतिपिछानी॥
जबहीयौआतमजानैं॥ तबहीनिजशि
वसुषठानैं॥१५॥ इतिपंचमढालम॥५॥
अथषष्टमढालम॥ गीताछंद॥ षटका
यजीवनहननतैंसबविधिदरबहिं
साटरी॥ रागादिभावनिवारतेंहिंसानभा
वितअवतरी॥ जिनकेंनलेशमृषानज
लतृणहूंबिनादीयौगहै॥ अठदशसह
सविधिशीलधरचिदब्रह्ममेंनितरमिर
है॥१॥ अंतरचतुर्दशभेदबाहिरसंगदस
धातैंटलै॥ परमादतजिचउकरमहील
खिसुमतिईर्यातैंचलै॥ जगसुहितक
रसबअहितहरिश्रुतसुषदसबसंशै
हरै॥ भ्रमरोगहरजिनकोवचनमुषचं
द्रतैंअमृतझरैं॥ छ्यालीसदोषबिनास
कुलश्रावकतनैंघरअसनकौं॥ लैतप ९

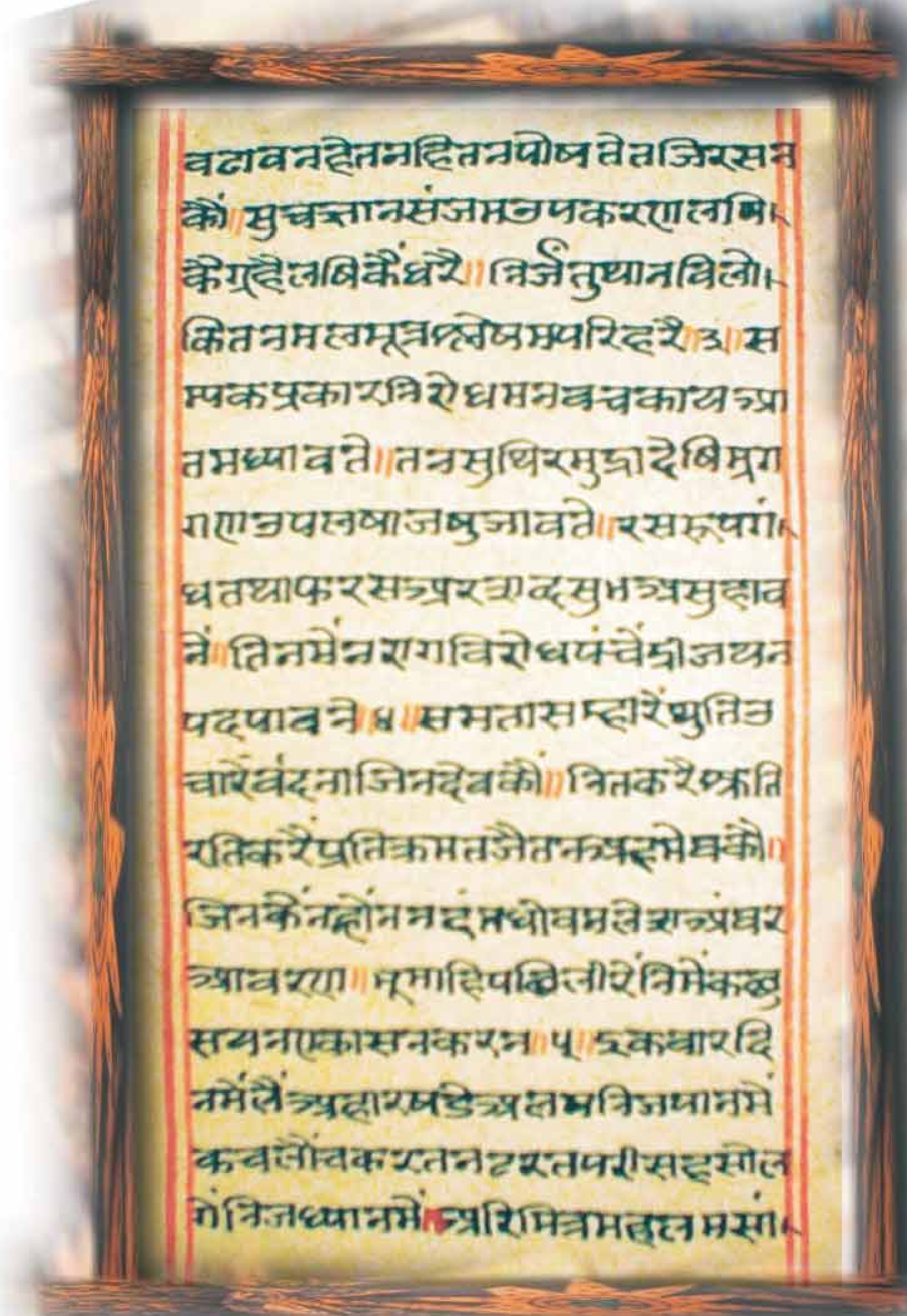
वढावनहेतनहितनपोषतेतजिरसन
कों॥सुचज्ञानसंजमउपकरणलखि
कैंगहैंलखिकैंधरैं॥निर्जंतुथानविलो
कितनमलमूत्रश्लेषमपरिहरैं॥३॥स
म्यकप्रकारनिरोधमनवचकायआ
तमध्यावते॥तनसुथिरमुद्रादेखिमृग
गणउपलखाजखुजावते॥रसरूपगं
धतथाफरसअरुशब्दसुभअसुहाव
नें॥तिनमेंनरागविरोधपंचेंद्रीजयन
पदपावने॥४॥समतासम्हारैंथुतिउ
चारैंवंदनाजिनदेवकों॥नितकरैंश्रुति
रतिकरैंप्रतिक्रमतजैंतनअहमेवकों॥
जिनकेंनन्होंननदंतधोवनलेशअंबर
आवरण॥भूमाहिपछिलीरैनिमेंकछु
सयनएकासनकरन॥५॥इकबारदि
नमेंलैंअहारखडेअलपनिजपानमें
कचलोंचकरतनडरतपरीसहसोंल
गेंनिजध्यानमें॥अरिमित्रमहलमसां॥

ढा० नकंचनकांचनिंदनथुतिकरन॥ अर्घ
६ नतारणअसिप्रहारणमेंसदांसमताध
रन॥ तपतपेद्वादशधरैवृषदशरतत्र
यसेवेंसदा॥ मुनिसाथमेंवाएकविचरें
चहैंनहिंभवसुखकदा॥ ऐहैसकलसं
जमचरित्तसुनियैसरूपाचरणअब
जिसहोतप्रघटैआपनीनिधिमिटैपर
कीप्रवृत्तिसब॥ ॥ जिनपरमपैनीसुबु
धिछेंनीडारिअंतरभेदिया॥ बरणादि
अररागादितैंनिजभावकौंन्यारकीया
निजमाहिंनिजकेहेतनिजकरिआप
कौंआपीगृह्यौ॥ गुणगुणीज्ञाताज्ञानज्ञे
यमकारकछुभेदनरह्यौ॥ ॥ जिहिंध्या
नध्याताध्येयकौंनविकल्पवचभेदनजं
हां॥ चिद्भावकर्मचिदेशकर्ताचेतना
क्रियातहां॥ तीनौंअभिन्नअभिन्नसुध
उपयोगकीनिश्चलदसा॥ प्रघटीजहां
दृगज्ञानव्रततऐतीनौंधाएकैलसा॥ ९॥ ९

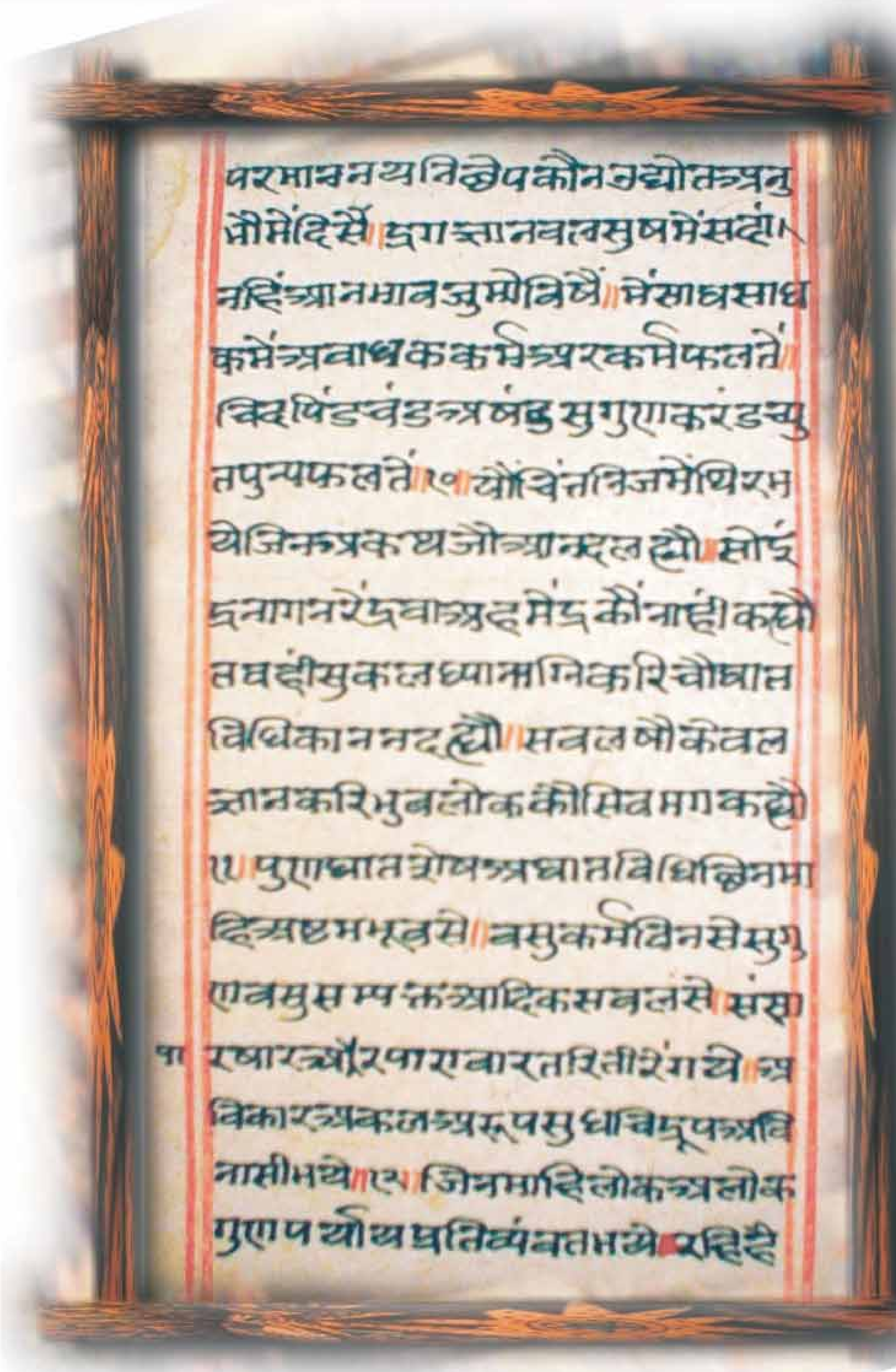
परमाननयनिक्षेपकौनउद्योतअनु
भौमेंदिसैं॥द्रगज्ञानबलसुषमैंसदा॥
नहिंआनभावजुमोविषैं॥मैंसाध्यसाध
कमैंअबाधककर्मअरुतसुफलनितैं॥
चितपिंडचंडअखंडसुगुणकरंडच्यु
तपुनिकलनितैं॥१०॥यौंचिंतनिजमेंथिरभ
येतिनअकथजोआनंदलह्यौ॥सोइं
द्रनागनरेंद्रवाअहमेंद्रकौंनाहीकह्यौ
तबहीसुकलध्यानाग्निकरिचौघात
विधिकाननदह्यौ॥सबलष्योकेवल
ज्ञानकरिभविलोककौंसिवमगकह्यौ
११॥पुनघातशेषअघातविधिछिनमा
हिंअष्टमभूवसे॥वसुकर्मविनसेसुगु
णवसुसम्यक्तआदिकसबलसे॥संसा
पा रषारअपारपारावारतरितीरंगये॥अ
विकारअकलअरूपसुचिचिद्रूपअवि
नासीभये॥१२॥निजमाहिलोकअलोक
गुणपर्यायप्रतिबिंबितभये॥रहिहैं

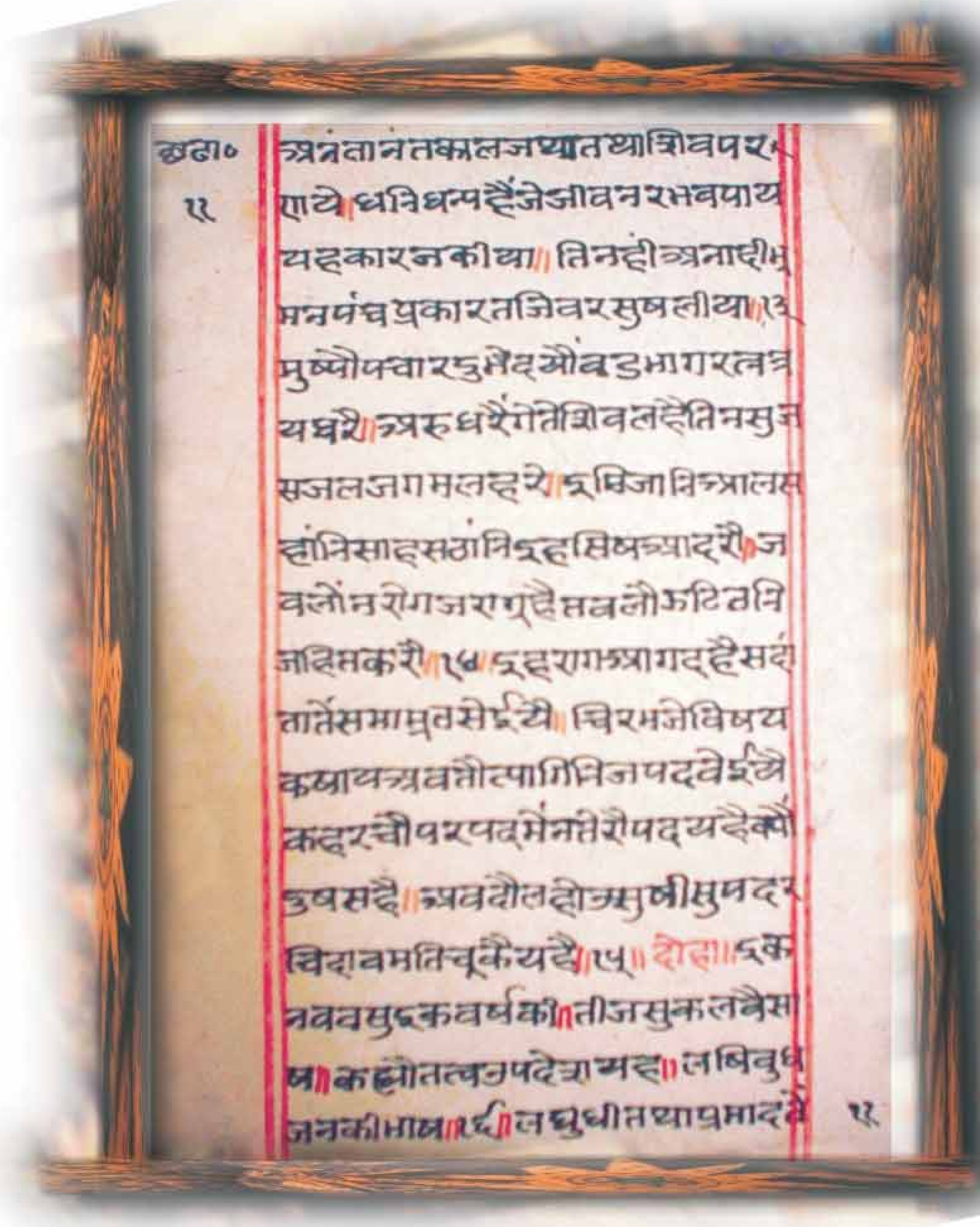

छढा० अनंतानंतकालजगत्यातथाशिवपर
११ णाये॥ धनिधन्यहैंजेजीवनरभवपाय
यहकारजकीया॥ तिनहीअनादीभ्र
मनपंचप्रकारतजिवरसुषलीया॥१३
मुष्योपचारदुभेदयौंवडभागरत्नत्र
यधरै॥ अरुधरैंगेतेशिवलहैंतिनसुज
सजलजगमलहरै॥ इमिजानिआलस
हांनिसाहसठांनियहसिषआदरौ॥ ज
वलौंनरोगजराग्रहैतवलौंझटितनि
जहितकरौ॥१४॥ यहरागआगदहैसदा
तातैंसमाम्रितसेईये॥ चिरभजेविषय
कषायअवतौत्यागिनिजपदवेईये॥
कहारच्यौपरपदमैंनतेरौपदयहैक्यौं
दुषसहै॥ अबदौलहोअसुषीसुपदर
चिदावमतिचूकैयदै॥१५॥ दोहा॥ इक
नवबसुइकवर्षकी॥ तीजसुकलबैसा
ष॥ कह्यौतत्वउपदेशयह॥ लषिबुध
जनकीभाष॥१६॥ लघुधीतथाप्रमादतैं ११